नकी थीउ विरक्तु, नकी गपु गिरस्त में,
मिली वठु महबूब सां, सामी चए सुततु,
मोटी ईंदुइ कीनकी, अहिड़ो हथि वक्तु,
पोइ रुअंदे रतु, अखिनि मों आजिज़ु थी.

मनुष्य को अनमोल देह प्राप्त हुई है। सामी साहब मनुष्य को समझाते हुए जीवन सफल करने के संबंध में कहते हैं कि हे मनुष्य! तुम न विरक्त/वैरागी बनो और न ही घर-गृहस्थी के जाल में फंसो; तुम तुरंत ही अपने प्रियतम परमेश्वर से मिलने का जतन करो। यही समय है। एक बार अवसर हाथ से निकल जाने पर दुबारा नहीं मिलने वाला है। फिर तुम्हें बहुत पछताना पड़ेगा और दीन हो कर अपनी आंखों से लहू के आँसू बहाने पड़ेंगे।

रामचरितमानस की एक चौपाई के अनुसार 'बड़े भाग मानुष तन पाया। सुर दुर्लभ सद्ग्रंथनि गावा।।' हमें ऐसा मनुष्य शरीर मिला है, जो देवताओं के लिए भी दुर्लभ है। मनुष्य जन्म में ही हम भक्ति द्वारा आत्मज्ञान प्राप्त कर जन्म-मरण के कुचक्र से छुटकारा पाकर मोक्ष-मुक्ति के अधिकारी बन सकते हैं। मनुष्य-जन्म एक अवसर है मोक्ष-मुक्ति पाने का। परमेश्वर को पाने के लिए अनेक लोग घर बार को त्याग कर, वैरागी-संन्यासी बन कर जंगल, पहाड़ या तीर्थ स्थानों पर चले जाते हैं। प्रभु को पाने के लिए भटकते रहते हैं। योगी बन कर कठोर साधनाएँ करते रहते हैं। इसके विपरीत असंख्य लोग अपने गृहस्थाश्रम में फँस कर माया के गुलाम बन जाते हैं। इस प्रकार घर-गृहस्थी में फँसे रहना और बैरागी बन कर गृहस्थाश्रम का त्याग करना, यो एक दूसरे के विरुद्ध दो किनारे या प्रवृत्तियाँ हैं। एक है प्रवृत्ति और दूसरी है निवृत्ति।

किन्तु सामी साहब ने एक मध्यम मार्ग सुझाया है। इस मार्ग में कोई अतिरेक नहीं है। भक्ति करने अथवा परमेश्वर को पाने के लिए न वैराग्य धारण करने की जरूरत है और न ही घर-गृहस्थी या प्रपंच के कीचड़ में फँसकर परमार्थ से दूर रहने की आवश्यकता है। मध्यम मार्ग यह है कि मनुष्य को अपने मन से वैरागी बनना चाहिये। मन में वैराग्य धारण कर, घर-गृहस्थी के कर्तव्य निभाते हुए, विहित कर्म करते हुए भगवान की भक्ति करनी चाहिए। गुरु का सान्निध्य पा कर, नाम-स्मरण करते हुए, विवेक जाग्रत कर आचरण करना चाहिए। अन्यथा मनुष्य को अनेक दु:ख सहने पड़ेंगे। उसके पास पछताने के सिवाय और कुछ नहीं बचेगा!

■